Article - 11

भारत में वैश्विक शिक्षा की नयी खोज

दैनिक जागरण

23 जून, 2008

भारत में उदारीकरण–भूमंडलीकरण के बाद से जीवन और यथार्थ में काफी परिवर्तन आ चुका है। भारत में मॉल संस्कृति का विकास होता जा रहा है। खीर और हलवे का स्थान अब चिप्स और चाकलेट ले चुके हैं। ई-मेल और इंटरनेट ने सामाजिकता में दखल देना आरंभ कर दिया है। यही कारण है कि हमको देश के सांस्कृतिक परिवेश में वर्तमान उपभोक्तावाद के साथ सामंजस्य बिठाने की जरूरत महसूस होने लगी है। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि कोई भी अकेला आदमी बिना वैश्विक संस्कृति में पैठ बनाये अपनी व्यक्तिगत एंव व्यावसायिक जिंदगी को बेहतर नहीं बना सकता है। यह सत्य है कि प्रत्येक क्षेत्र, प्रदेश और देश प्रचुर सांस्कृतिक विरासत का धनी है। इसलिए यह जरूरी है कि जब हमको नयी पीढ़ी के लड़के–लड़कियों को व्यावसायिक दक्षता से संपन्न करना है तो हमें उनको सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक कुशन प्रदान करना होगा ताकि वे आधुनिक प्रोफेशन (व्यावसायिकता) के झटकों को झेलने में समर्थ हो सकें। हमको जितना अपने व्यावसायिक जीवन में सफल होना है, उतना ही स्वस्थ एवं प्रसन्न रहना भी जरूरी है।

इसके लिये ह**में** ज्ञान और ध्यान को अपने स्वस्थ विकास का हिस्सा बनाना पड़ेगा। शिक्षक हमको ज्ञान प्रदान करते हैं तो दूसरी तरफ गुरु हमको ध्यान में दक्षता हासिल करने की मदद देते **हैं**। ध्यान का उचित परिणाम में प्रयोग मानसिक एवं अलौकिक क्षितिज को स्पर्श करने का सम्बल प्रदान करता है तथा असीम ऊँचाइयों तक पहुँचाता है। इसलि**ए** आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को परम्परावादी एकेडमिक शिक्षा के स्थान पर सांस्कृतिक एवं नैतिक शिक्षा प्रदान की जा**ए**।

आजकल शिक्षा विभिन्न प्रकार के नैरेशन (वर्णनों, **वा**दों–प्रतिवादों से **ग्र**स्त है) में उलझ गयी **है**; छात्रों को सीखने के लिये बहुत कुछ **ग्र**हण करना पड़ता है। छात्रों के बस्तों का बढ़ता वजन अपनी कहानी स्वयं ही कह रहा हैं इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक–छात्रों के मन वैभिन्य को परस्पर विपरीतं ध्रुवों से हटाकर छात्रों तथा शिक्षकों को आपसी सहयोग से सुलझाना लाजमी हो गया है। हमको छात्रों को सारग्राही तथा पोषक शिक्षा प्रदान करनी होगी। वर्तमान में शिक्षक छात्रों को जिस प्रकार की शिक्षा से परिपूर्ण कर रहे हैं वह उनके लिये अपच का कारण बनती जा रही है। जबकि शिक्षा को सुग्राह्य होना आवश्यक है।

परिसंवाद ही वह रास्ता है जो इसमें संतुलन **ला** सकता है। इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि छात्र कितना ग्रहण कर सकते हैं और शिक्षक उनको कितना ज्ञान प्रदान कर सकते हैं। परिसंवादों के माध्यम से शिक्षक–छात्रों के मध्य नये किस्म के संबंधों का जन्म होगा, तथा दोनों एक दूसरे की आवश्यकताओं को ठीक से समझ सकेंगे। शिक्षा को दिमागी, हृदय एवं आत्मा की स्वतंत्रता प्रदान करनी होगी। छात्र इस बात को समझ सकेंगे कि यह दुनिया आंकड़ों की वास्तविकता ही नहीं है, वास्तविकता कुछ दूसरी ही है। शिक्षाशास्त्र के उच्चकोटि के विद्वान पाउलो फ्रेयरे इसे 'समस्या उन्मुख

शिक्षा' की संज्ञा प्रदान करते हैं। उनका मानना है कि परंपरागत शिक्षा अपूर्ण तथा अनुपयोगी साबित हो रही है। इससे आधे–अधूरे व अनुपयोगी ज्ञान से युक्त छात्र तैयार हो रहे हैं। शिक्षा का इस प्रकार का अपूर्णता भरा चरित्र छात्रों के लिए हितकर नहीं है, इसलिए इसमें बदलाव की महती आवश्यकता है ताकि शिक्षा उद्देश्यपरक एवं वास्तविक स्वरूप ग्रहण कर सके।

इस प्रकार की शिक्षा के लिए परिसंवादमूलक शिक्षा उपयुक्त शब्द है। शिक्षा में बदलाव के लिए आवश्यक है कि उसको शाश्वत सत्य, प्रेम, विश्वास तथा सौहार्द्र जैसे गुणों से युक्त किया जाए ताकि बच्चे अपनी वास्तविक एवं व्यावसायिक जिंदगी में सच्चे और योग्य नागरिक बन सकें। सत्य, प्रेम, विश्वास और सौहार्द्र शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक धरातल के लिए भी अति आवश्यक है। इसलिए अब वो समय आ गया है जब हमें पारंपरिक धारा के विपरीत जाकर शाश्वत मानव मूल्यों के लिए मार्ग प्रशस्त करना होगा ताकि हम सभी उस पर आगे बढ़ सकें तथा उन्नति कर सकें।

शिक्षा में परिसंवाद की स्थापना एक क्रांतिकारी कदम साबित होगा। परिसंवाद इस तरह से नहीं होने चाहिए कि यह लगे कि कोई एक व्यक्ति अपने विचार दूसरों पर थोप रहा है और न ही यह इस प्रकार से होने चाहिए कि उनसे यह उद्‌भासित हो कि सामान्य तौर पर एकदूसरे के बीच विचार-विनिमय नहीं हो रहा है। छात्रों के बीच होने वाले विचार-विनिमय अथवा परिसंवाद विश्वास और प्रेम से ओतप्रोत होने

चाहिए। इसके माध्यम से एकदूसरे के बीच समानान्तर भरोसे की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होनी आवश्यक है। छात्रों तथा शिक्षकों के मध्य होने वाले परिसंवादों की तार्किक परिणति होनी चाहिए। परिसंवादों के बगैर कोई कम्युनिकेशन (विचार विनिमय) नहीं हो सकता है और अगर विचार विनिमय **न हो तो** शिक्षा का उद्देश्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है। शिक्षा ही वह मध्यस्थ बिन्दु है जहां शिक्षक और शिष्य अपने बीच के विभेदों को समाप्त करते हैं। वस्तुतः परिसंवाद शिक्षा शास्त्र का वह अभ्यास है जो गुरू शिष्य को स्वतंत्रता प्रदान करता है। यही शिक्षाशास्त्र का महत्वपूर्ण बिन्दु है जो गुरू–शिष्य को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देकर शिखा के वास्तविक उद्देश्य तक पहुंचाता है। परिसंवाद तो किसान के उस यक्ष प्रश्न की भांति है जब वह स्वयं से पूछता है कि उसे क्या करना चाहिये। यही तो शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है कि हम अपने प्रश्नों का हल स्वयं से पूछ कर तलाश करें।

मैंने बारहवीं कक्षा तक की अपनी शिक्षा हिन्दी माध्यम से सम्पन्न की। परंतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में मैंने आई.आईटी. तथा प्रशासकनिक सेवा की परीक्षा अंग्रेजी में सफलतापूर्वक सम्पन्न की। मुझे अपने ग्रामीण परिवेश का व्यक्ति होने से कोई समस्या नहीं उठानी पड़ी। इसका कारण था कि जब मैं स्कूल में पढ़ रहा था तब रचनात्मकता की खुली छूट थी। अभिभावक की शिक्षकों को पूर्व सम्मान प्रदान करते थे क्योंकि गुरूजन इस सम्मान के सच्चे अर्थों में अधिकारी थे। इसकी वजह यह थी तब वे मात्र शिक्षक ही नहीं होते थे वे वास्तविक अर्थों में गुरू होते थे।

ये आदर्शों तथा मूल्यों के प्रति समर्पित होते थे। मेरे स्कूल गुरूओं ने मेरे भीतर जिस आत्मविश्वास तथा संकल्प का बीज प्रत्यारोपित किया था उसी की बदौलत मैंने अंग्रेजी माध्यम से दक्षता प्राप्त की तथा प्रतियोगी परीक्षा में देश के प्रख्यात नामी–गिरामी संस्थाओं के छात्रों के मध्य मुझे सफलता मिली, इसके अतिरिक्त लोक सेवक होनके साथ–साथ मुझे ललित कला अकादमी का पेंटिंग में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो सका। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि स्कूल की शिक्षा चाहे आज ग्रामीण हों

अथवा शहरी आप सामान्य व्यक्ति हों अथवा एलीट (विशिष्ट) यह बिन्दु हैं जो छात्रों के मानसिक एवं भावनात्मक धरातल का प्रस्फुटन करती है। इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षक अपने छात्रों को प्रश्न पूछने तथा परिसंवाद के लिये प्रोत्साहित करें। इसके अलावा शिक्षणोत्तर गतिविधियों जैसे पेंटिंग, खेल, व्यायाम, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, आध्यात्मिक उत्कर्ष आदि भी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में जरूरी है। यह सब चीजें व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन्हीं की बदौलत व्यक्ति अपनी जिंदगी में वास्तविकताओं को स्वीकार करने, आत्मविश्वास, सत्य को स्वीकारने, कार्य के प्रति निष्ठा, लगन आदि गुणों से परिपूर्ण होता है। इसी के सहारे आज वैश्विक छात्रअपने को अधिक उन्मुक्त महसूस कर सकता है। एक बात और है वह यह कि वर्तमान का वैश्विक छात्र मशीनी पढ़ाई से उकता गया है। यही कारण है कि वह टीवी प्रोग्रामों को देखना पसंद करता है जहां उसे जीवन की सच्चाइयों सक पृथक रखकर कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इसीलिये आवश्यक हो गया है कि शिक्षा संस्थान वैश्विक परिदृश्य को सामाने रखकर भारतीय परिवेश में शिक्षा के नये मूल्यों के अनुसार छात्रों के तृष्णा को शांत करे, जिनमें परिसंवाद हों।

विभिन्न आर्थिक भविष्यवाणियां हैं कि 2040 तक भारत तीसरा सबसे बड़ा आर्थिक परिक्षेत्र होने की दिशा में अग्रसर है। आज भारत में 480 मिलियन लोग 19 वर्ष से कम आयु के लोग हैं। हमारो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मान्यता थी कि किसी भी निर्णय का सबसे बेहतर परीक्षण यहीं पर हो सकता है जब उसे यह सोचकर लिया जाये कि उसमें निर्धनतम व्यक्ति को क्या लाभ होगा। वे यह भी मानते थे कि साध्य से आर्थिक साधनों की पवित्रता आवश्यक है। यदि साधन खराब अथवा गंदे हैं तो उनसे समाज दूषित होगा। उसमें भ्रष्टाचार पनपेगा। गांधी जी हमारे आदर्श (रोल माडल) हैं। उनकी अवधारणा थी कि प्रकृति हमको हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है परंतु लालच अथवा प्रलोभन का नहीं। हम जिस प्रकार के भारत का निर्माण करना चाहते हैं उसके लिये मूल्यवान यह है कि सभी लोगों को समान अवसर मिले तथा अपनी आवश्यकताओं को सभी लोग जाने–समझें। इसके विपरीत आर्थिक सोच के विषय में वाल स्ट्रीट में गार्टन ग्रीको ने कहा है कि लालच

एक अच्छी चीज है, लालच से इकोनामी को समृद्ध होने में सहायता मिलती है। वह इसी संदर्भ को बताता है शीघ्र ही धनवान बनो, इस बात की परवाह मत करो कि किस प्रकार धनवान बने हो, तुमने किसको ठेस पहुंचायी है यह कोई गौर करने लायक बात नहीं है। दुर्भाग्य का विषय है कि आज हम भारत में इस प्रकार के प्रोफेशनलों की बहुतायत देख रहे हैं जो ग्रीको को गांधी जी से ज्यादा महत्ता दे रहे हैं। यह क्यों? इसका उत्तर यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली और देश में असत्य का घुन लग गया है। इसे मूल्य परख एवं परिसंवाद मूलक शिक्षा प्रणाली को अपनाकर ही दूर किया जा सकता है।

आज हमारे देश के युवा तेजी से आगे बढ़ते हुये जल्दी से जल्दी अमीर बनना चाहते हैं।उनकी यह कोशिश इकोनामी को आगे बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभा रही है लेकिन ध्यान देने योग्य हे कि इस चक्कर में वे पीछे क्या–क्या छोड़ रहे हैं। इसे देखना और समझना जरूरी है। भारत का आदर्श पुरूष कौन है? ग्रीको अथवा गांधी? आज हम किसके मूल्यों का संवर्द्धन कर रहे हैं। इस प्रश्न का उत्तर महत्वपूर्ण है क्योंकि यही समाज का दिशा निर्देशक तत्व है। इस बात को गहराई से सोचना होगा क्योंकि यह समाज को दशकों तक प्रभावित करता रहेगा। हमारा देश क्या आकार धारण करेगा यह बात इससे भी जुड़ी है। यह प्रश्न इसलिये भी महत्वपूर्ण है कि हम अपने युवकों को क्या आदर्श तथा मूल्य प्रदान कर रहे हैं। भविष्य में युवकों को नेतृत्व करना है तो उनको आर्थिक मशीन का पुर्जा मात्र नहीं बनाया जा सकता है। इसलिये इस बात की सबसे बड़ी जरूरत है कि भारत के स्वस्थ विकास के लिये मूल्य परक शिक्षा प्रणाली विकसित की जाये जो आगामी दशकों में शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ नागरिक विकसित कर सके।

-X-X-X-